हरियाणवी लोक संगीत पर एक-चर्चा

मीनाक्षी
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग
एस. एम. एस. खालसा लबाणा
गर्ल्ज कॉलेज (बराड़ा)

हरियाणा: हरियाणा संस्कृत शब्द हरी और आयन से मिलकर बना है, जिसमें हरी शब्द भगवान विष्णु का सूचक है और आयन का अर्थ होता है घर, इस प्रकार हरियाणा भगवान के घर से लिया गया है यहीं पर महाभारत का महान युद्व लड़ा गया था। जिसमें विष्णु अवतार भगवान श्री कृश्ण ने गीता का उपदेश कुरूक्षेत्र की भूमि पर दिया था। हालाँकि कुछ विद्वान जैसे मुनि लाल, मुरली चन्द शर्मा, । फड़के, सुखदेव सिंह आदि का मानना है कि हरि शब्द यहाँ की हरियाली का प्रतीक है और आयन का अर्थ होता है जंगल जो कि हरियाणा के नाम को सार्थक करता है।

कुछ प्राचीन हिन्दु ग्रन्थों के अनुसार, कुरूक्षेत्र की सीमाएं मोटे तौर पर हरियाणा राज्य की सीमाएँ हैं। भारत के महाकाव्य महाभारत में हरियाणा का उल्लेख बहुधान्यक और बहुधन के रूप में किया गया है। महाभारत में वर्णित हरियाणा के कुछ स्थान आज के आधुनिक शहरों जैसे, प्रिथुदक–पेहोवा, तिलप्रस्थ–तिल्पुट, पानप्रस्थ–पानीपत और सोनप्रस्थ–सोनीपत में विकसित हो गए हैं। गुड़गाँव का अर्थ गुरू के नाम यानि गुरू द्रोणा चार्य के गाँव से है। कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध कुरूक्षेत्र में हुआ था। कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं पर दिया था।

हरियाणा उत्तर भारत का एक राज्य है जिसकी राजधानी चण्डीगढ़ है। इसकी सीमांए उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश दक्षिण एंव पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई है।

वर्तमान में खाद्यान और दुग्ध उत्पादन में हरियाणा देश में प्रमुख राज्य है।

हरियाणवी लोक संगीतः भारत विभाजन से पहले हरियाणा और पंजाब एक ही था। 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा एक स्वतन्त्र राज्य घोषित हुआ। हरियाणा प्रदेशन ने सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कृषि आदि समस्त क्षेत्रों में उन्नति की है। लोक संगीत लोक नृत्य एवं लोक वाद्यों ने भी बहुत उन्नति की।

1. हरियाणवी लोक गीतः– हरियाणा में विभिन्न अवसरों पर लोकगीत गायन की परम्परा है विवाह सम्बन्धी लोकगीत अत्याधिक प्रचलित है। हरियाणवी लोक संगीत को निम्न भागो में बाँटा गया है।

(i) संस्कार गीतः– जिसके अन्तर्गत जन्म, विवाह, मृत्यु के गीत होते हैं जैसे – जन्म सम्बन्धित ''पीलिया गीता'' आता हैं। छटी के गीत आदि। सुहागगीत, बटणागीत, बनवाड़ा गीत, भात के गीत, घुड़चढ़ी गीत, फेरे के गीत, विदाई गीत, धान गीत इत्यादि।

(ii) ऋतु संबंधी गीतः– भारत वर्ष में छः ऋतुएँ आती हैं। वर्षा, ग्रीष्म, शरद, हेमन्त, शिशिर, वसन्त समानय तौर पर तीन ऋतुएँ मुख्य हैंः– ग्रीष्म, वर्ष और हेमंत इन पर बहुत से लोक गीत प्रचलित है।

(iii) दिनचर्या के गीतः– इनके अर्न्तगत रहन–सहन, पनघट चक्की, खान–पान, वेषभूशा व कृषि सम्बन्धी गीत आते हैं .....

(iv) धार्मिक गीत :– धार्मिक गीतों के अर्न्तगत कार्तिक के गीत, सांझी के गीत, गुगा पीर के गीत, गोवर्धन गीत, भक्ति गीत आदि।

(v) विविध गीतः– इनके अर्न्तगत–सास, बहु, देवर भाभी, जीजा–साली, पति–पत्नी, भाई–बहन सम्बदी आदि आते हैंः–

1. न्याबो से म्हार बालमा ————————————
2. ससने न जांगी ————————————————
3. फौजी आया री ————————————————
4. सास मेरी मटकणी नै ————————————
5. मेरी ए सास के पाँच पुतर ————————————

हरियाणा के लोक वाद्य

हरियाणा के अनेक वाद्य यन्त्र हैं जो लोक संगीत की संगत के लिए अनिवार्य है मुख्य तीन वर्गो में आते हैं – तन्त्री वाद्य, सुशिर वाद्य, ताल वाद्य

1. घांटियां :– मंदिरों में आरतियों और कीर्तनों में प्रयोग होती है।
2. चिमटा :–यह लम्बे और चपटें लोहे के टुकड़े होते हैं जिन्हें एक तरफ से जोड़ा जाता है। जिन पर छोटी – छोटी घण्टियाँ लगी होती हैं।
3. घड़ा :– मिट्टी का घड़ा जो विभिन्न अवसरों पर लय बनाए रखने के लिए बनाया जाता है।
4. डफ:–यह एक पक्षीय ढोल होता है और नृत्य के साथ विशेश रूप से धमाल नृत्य के साथ लगाया जाता है और यह महेंद्रगढ़ जिले में लोकप्रिय हैं, यह बनावट में बड़ा सरल होता है और इसमें केवल एक खुला गोल फ्रेम होता है।

जो केवल एक तरफ से खाल से मढ़ा होता है यह हाथ से छोटी डंडियों से बनाया जा सकता है, यह उत्सव सम्बन्धि अवसरों पर बजाया जाता है।

मंजीरा :– यह धात्विक झाँझो का एक जोड़ा होता है। जिसे लय उत्पन्न करने के लिए प्रयोग किया जाता है, नाथ परम्परा के जोगियों द्वारा अपनी प्रार्थना के दौरान इसका प्रयोग किया जाता है।

सारंगी :– यह तन्त्री वाद्य हैं जिसे गज के साथ बजाया जाता है। जो पशु के बालों की लट को कमान रूपी लकड़ी पर चिपका कर बनाया जाता है, मुख्य गायक के साथ इस यन्त्र का होना आवश्यक है, यह साठ से. मी. लम्बी लकड़ी के टुकड़े को खोखला कर बनाया जाता है, समस्वरण के लिए 4 खूँटे लगाए जाते हैं, ताकि 12 अर्ध स्वरकों के तारत्व के अनुसार तारों को लगाया जा सके यह घुम्मकड़ जोगियों तथा स्वांग प्रर्दशन के दौरान उपयोग में लाया जाता है।

खरताल :– यह लकड़ी के दो छोटे टकड़ों पर लगे छोटे घुँघरू होते हैं और अन्य वाद्य यन्त्रों की ताल के अनुसार लय को बनाए रखने के लिए इन्हें एक दूसरे पर मारते हैं।

डेरू :– डमरू का बड़ा रूप है लेकिन यह भी वहीं प्रयोजन पूरा करता है।

ताशा :– यह एक पक्षीय मिट्टी का यन्त्र होता है जिसे दो छोटी डंडियों से बजाया जाता है। इसे विशेष अवसरों पर और कभी नृत्य प्रदर्शन के अवसर पर भी बजाया जाता है।

नगाड़ा :– यह एक पक्षिय ढोल है लेकिन यह बड़ा और भारी होता है। इसे बजाते समय ज़मीन पर रखा जाता है। यह सांमती काल का अवशेष है,

जब राज्य घोषनाएं नगाड़ा बजा कर की जाती थी।

घुँघरू :– यह नर्तकी द्वारा अपने टखनों पर बाँधे जाते है। ताकि नृत्य को शक्ति प्रदान कर और प्रभारी बना सके। यह लय उत्पन्न करने में सहायक है।

खंजरी :– यह डफ की छोटी किस्म है, अन्तर केवल इतना है कि इसके चारो ओर घुँघरू लगे होते हैं, इसे समान्यत एकल नृत्य प्रदर्शनों में उपयोग में लाया जाता है।

शंख :– यह सबसे प्राचीन वाद्य यन्त्र है। इसे उपयोग में लाने से पहले शंख के आधार में इस प्रकार सावधानी से छेद किया जाता है कि इसका प्राकृतिक छेद न बिगड़े इस यन्त्र को प्राय मन्दिरों और तीर्थ स्थानों पर प्रयोग में लाया जाता है। यह केवल पृष्ठानाद उत्पनन करता है महाभारत युद्ध क्षेत्र में श्री कृष्ण द्वारा उपयोग में लाए गए शंख को पंचजन्य कहा जाता है।

इकतारा :– यह एकल तन्त्री वाद्य उंगलियों से बजाया जाता है। यक एक मीटर लम्बे बाँस का बना होता है जिसके एक सिरे पर बड़ा तुंबा लगा होता है।

हरियाणा के प्रमुख लोक नृत्य

हरियाणा में नृत्य कला वैदिक काल से ही चली आ रही है और हरियाणवी नृत्य हरियाणा की संस्कृति का प्रतीक भी माना जाता है। यहाँ नृत्य विशेष उत्सव मौसम के आधार पर किया जाता है। हरियाणा राज्य में बहुत से नृत्य किए जाते है। इन नृत्य कलाओं से लोगों का मनोरंजन उमंग एंव उत्साह के लिए किया जाता है।

हरियाणा के नृत्यों में ''चौपाइया'' शामिल है। जो एक भक्ति नृत्य है और पुरूशों और महिलओं द्वारा मञजीरा को लेकर किया जाता है। बारिश के दौरान 'रतवई' नृत्य मेवातियों का पसंदीदा है। 'बीन बाँसुरी' नृत्य हवा की संगत के साथ चलता है जो एक वायु यन्त्र है। हरियाणा के लोक नृत्य राज्य के समृद्व लोकगीत और परम्परा को प्रदर्शित करते है। लोगों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को दर्शातें हैं। इन लोकनृत्यों से लोगो में एकता और एकजुटता की भावना पैदा होती है। चाहे वह त्योंहार, मेले, विवाह, जन्म या फसल के मौसम का समारोह हों। लोग एक साथ नृत्य और आनन्द लेते है।

हरियाणवी लोक नृत्यों की सूची इस प्रकार है :–

1. **फाग नृत्यः–** यह नृत्य फाल्गुन के महीनें में किसानों द्वारा किया जाता है। इस दौरान महिलाए पारम्परिक रंगीन वस्त्र जबकि पुरूष रंगीन पगड़ीयाँ पहनते हैं।

2. **सांग (स्वांग) नृत्य :–** सांग हिन्दी शब्द 'स्वांग' का अपभ्रंश हैं। उतरी भारत में हरियाणा, उत्तर प्रदेश व राजस्थान राज्यों में प्रचलित सांग एक प्रकार की संगीतमय नाटिका है। जिसमें लोक कथाओं को लोकगीत संगीत व नृत्य आदि से नाट्य बद्व किया जाता है। इस विधा में पंडित लखमी चन्द जी का बड़ा नाम व सम्मान है। उन्होनें 65 के लगभग सांग लिखे हैं। जिसके कारण उन्हें सांग सम्राट तथा हरियाणा का सूर्यकवि कहा जाता है। सही मायानों में यह नृत्य हरियाणा की संस्कृति को दर्शाता है। एक समूह जिसमें 10 या 12 लोगों की संख्या सम्मिलित है लोग इसका प्रदर्शन करते हैं। नृत्य में मुख्य 12 लोगों की संख्या सम्मिलित है, यह नृत्य मुख्य रूप से उन धार्मिक कहानियों और लोककथाओं को दर्शाता है। जो सार्वजनिक स्थानों पर की जाती है। यह पाँच घण्टे तक चलती है। इस नृत्य में क्रॉस – ड्रेसिंग काफी लोकप्रिय है, कुछ पुरूष प्रतिभागी महिलओं की वेशभूषा धारण करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह नृत्य 1750 ई. में पहली बार दिखाई पड़ा और किशन लाल भट्ट द्वारा इसे वर्तमान रूप में विकसित किया।

3. **छठि नृत्य :–** भारत के कईं स्थानों में, एक नवजात शिशु का जन्म खुशी के साथ मनाया जाता है। छठी नृत्य भी एक अनुशानिक नृत्य है, जिसे उसी अवसर पर किया जता है। लेकिन, यह नृत्य केवल लड़के के जन्म के छठे दिन करती है। यह एक रोमांटिक नृत्य है और रात के दौरान किया जाता है। उत्सव के अन्त में उबला हुआ गेहूँ और चना सभी सदस्यों को वितरित किया जाता है जो प्रदर्शन के लिए उपस्थित होते हैं।

4. **खोरिया नृत्य :–** खोरिया नृत्य विशेष रूप से महिलओं द्वारा प्रस्तुत झूमर नृत्य शैली और चरणों की विविधता का एक सामूहिक रूप है। यह नृत्य हरियाणा के मध्य क्षेत्र में लोकप्रिय है और लोगो के दैनिक मामलों से जुड़ा हुआ है और सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे फसल, कृषि कार्य इत्यादि के लिए इस नृत्य के लिए कलाकार बढ़िया गोल्डन – थ्रेड वर्क के साथ स्कर्ट पहनते हैं और भारी देहाती गहनों के साथ चमकीलें रंग के घूँघट वाले दुपट्टे पहनते हैं।

5. **धमाल नृत्य :–** धमाल नृत्य गुड़गाँव क्षेत्र में प्रसिद्व है। नृत्य की उत्पति महाभारत के समय हुई थी। यह नृत्य केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है। वे धमाल की आवाज के साथ गाते और नाचते हैं। लोग इस नृत्य को तब करते हैं। जब उनकी फसल तैयार होती है। नृत्य के दौरान पुरूष प्रतिभागी एक अर्ध चक्र बनाते हैं और भगवान, गणेश देवी भवानी और भगवान ब्रहा, भगवान विष्णु और भगवान शिव की पवित्र त्रिमूर्ति की प्रार्थना करते हैं।

6. **डफ नृत्य :–** डाफ नृत्य मुख्य रूप से किसानों द्वारा बसन्त के मौसम के आगमन पर भरपूर फसल के उपलक्ष्य में किया जाने वाला एक मौसमी नृत्य है। महिलाओं द्वारा पहने गए गहनों की आवाज़ के साथ डैफ या एक तरफा ड्रम संगीत पेश करते हैं।

7. **घूमर नृत्य :–** हरियाणा का एक अनोख पारंपरिक लोक नृत्य, घूमर नृत्य राज्य के पश्चिमी हिस्सों में लोकप्रिय है। नृत्यांगनाओं के वृत्ताकार आन्दोलन इस नृत्य को अलग पहचान देते हैं। आमतौर पर राज्य के सीमा क्षेत्र की लड़कियाँ घूमर का प्रदर्शन करती है। लड़कियाँ गाते हुए घूमने वाले आन्दोलन में नृत्य करती हैं और संगीत के गति के रूप में लड़कियों के जोड़े बढ़ते हैं और तेजी से घूमते हैं। यह नृत्य होली, गणगौर पूजा और तीज जैसे त्योंहारों के अवसर पर किया जाता है।

8. **झूमर नृत्य :–** ''झूमर'' नामक एक आभूषण के नाम पर किया जाने वाला नृत्य, झूमर नृत्य भी हरियाणा के लोकप्रिय लोक नृत्य में से एक हैं। यह विवाहित लड़कियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य को ढोलक और थाली जैसे वाद्यो की धुन पर किया जात है।

9. **गुग्गा नृत्य :–** यह संत गुग्गा के लिए किया जाने वाला नृत्य है। इस प्रदर्शन में भक्त उनके सम्मान और प्रशंसा में विभिन्न प्रकार के गीत गाकर गुग्गा पीर की कब्र के चारों ओर नृत्य करते हैं।

10. **लूर नृत्य :–** लूर नृत्य का नाम हरियाणा के बांगर क्षेत्र में लड़कियों के नाम पर रखा गया है। यह होली के त्योंहार के दौरान किया जाता है। यह वसन्त के आगमन और इसके साथ खेतों में रबी फसलों की बुवाई का प्रतीक है।

11. **रासलीला नृत्य :–** रास शब्द का अर्थ है नृत्य यह पारम्परिक नृत्य फरीदाबाद जिले के ब्रेजा खेत्र के लोगों के बीच आम था। रासलीला का

नृत्य रूप विभिन्न प्रकार के गीतों से भरा पड़ा है जो भगवान कृश्ण की प्रशंसा में हैं।

आज हरियाणवी संगीत किसी परिचय का मोहताज नहीं है तथा इसका प्रचार– प्रसार दूर–दूर तक फैला है। हिन्दी सिनेमा में भी हरियाणा के कलाकार गायन कर रहे हैं तथा बहुत से अभिनय कर रहे है। हरियाणवीं शब्दों का प्रयोग होता है। गायन में भी एवं कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा एक नवम्बर को हरियाणा विजय दिवस पर 'रत्नावली' युवा महोत्सव का आयोजन बड़े ही जोश के साथ किया जाता है। जिसमें हरियाणवी जन जीवन पर आधारित चित्रकला, सांग, परिधान, वेशभूषा, हरियाणवी खान–पान, शिल्प कला, लोक गायन वादन, नृत्य, चौपाल, लघु फिल्म, चुटकुलें, वाद–विवाद भाषण–काव्य इत्यादि का विश्वस्तरीय स्तर पर मंचन होता है जिसमें हरियाणवी लोक कलाकार अपनी प्रस्तुति देते हैं। इन्हें राज्य स्तर पर सम्मानित किया जाता हैं। हरियाणवीं कलाकारों को एक उच्च स्तर का मंच तो मिलता ही है साथ ही रोज़गार की भी उचित सम्भावनाएं मिलती हैं।